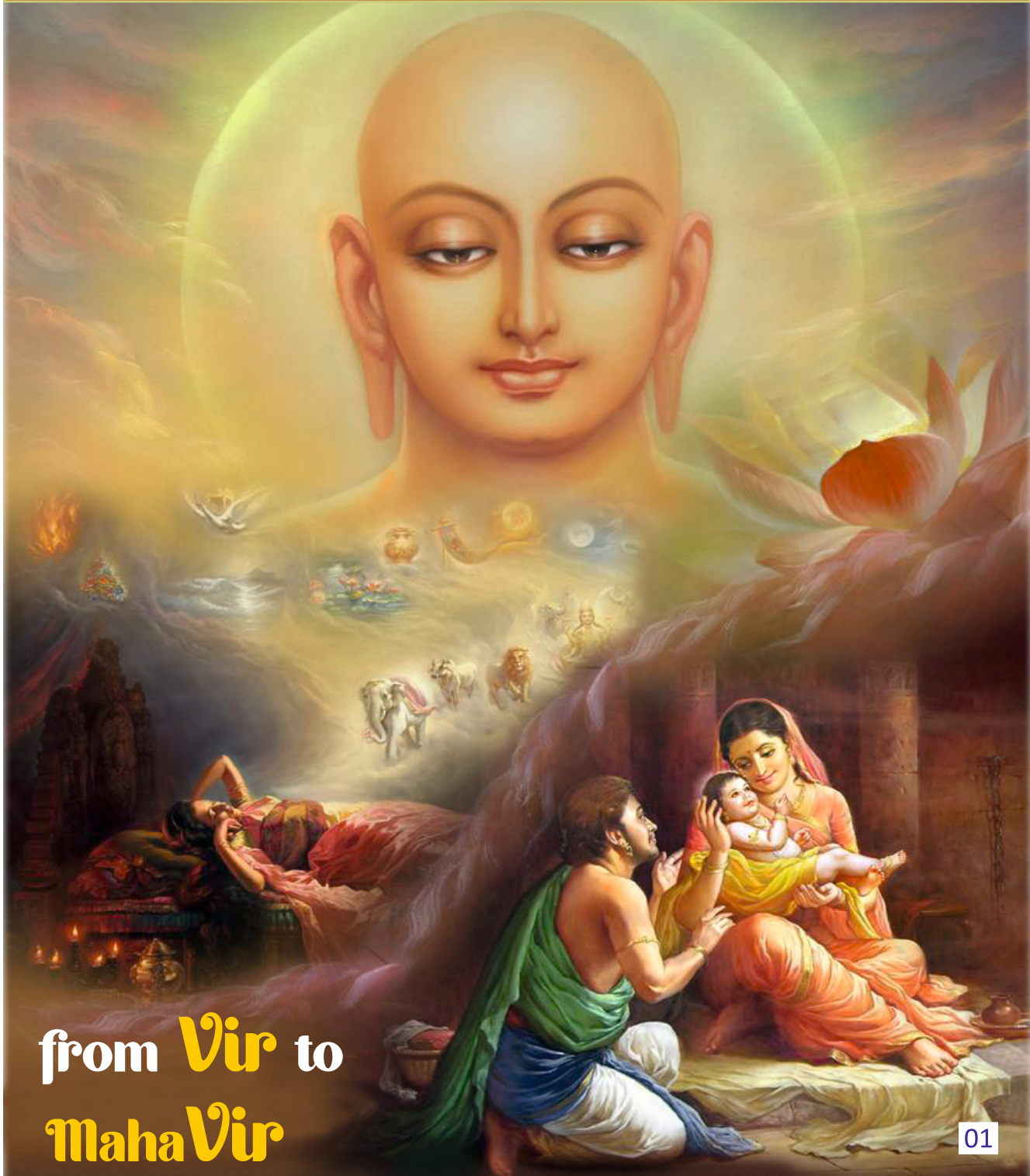


LOOK N LEARN

Vol No. 13 • Issue No. 12 • Mumbai • 10th August 2021 • Price : Rs 5/- (Multilingual Fortnightly)



from **Vir** to
MahaVir



दीदी : परमात्मा महावीर के अनुयायी होने के कारण हम वीर तो हैं ही, लेकिन हमें ऐसा क्या करना चाहिए की जिससे आज वीर से कल हम महावीर बन सके। चलो बच्चों आज हम "वीर से महावीर" तक की यह यात्रा शुरू करें। वर्धमान आप जैसे ही बालक थे।

रोहन : फिर वर्धमान महावीर कैसे बने?

दीदी : जब वर्धमान ने अपने अवगुणों को जाना, और उन्हें दूर करने का प्रयत्न किया तब उनके आत्मिक गुणों का प्रागट्य हुआ और वह धीरे धीरे महावीर बनते गए।

रीटा : परमात्मा महावीर में कौन-कौन से गुण थे? और दीदी अगर हम भी अपने अवगुणों को दूर करें और गुणों का प्रागट्य करें तो क्या हम भी वीर से महावीर बन जाएंगे?

दीदी : हा बिलकुल, चलो हम परमात्मा में कौन-कौन से गुण है वह जाने।

Didi : As we are the followers of Parmatma Mahavir we are Vir(brave), but what is it that we should do so that we become Mahavir. Kids! let us embark on the journey from "Vir to Mahavir". Vardhman was also a child like you.

Rohan : Then how did Vardhman become Mahavir?

Didi : Vardhman introspected on his own drawbacks and then tried to eliminate them. By doing this he manifested the true nature of his soul and slowly became Mahavir.

Rita : What were the Virtues of Parmatma Mahavir? and didi, if we try to overcome our vices and increase our virtues, will we also become like Parmatma Mahavir?

Didi : Yes of course, Let us know "A to Z" virtues of our Parmatma.

A-Z VIRTUES OF DARMATMA



A
ACCEPTANCE
AWARENESS
ACCOUNTABILITY

B
BRAVE
BENEVOLENT
BANDHA MUKT

C
COURAGE
COMPASSION
CHEERFULNESS

D
DEVOTION
DETACHMENT
DETERMINATION

E
ETHICAL
EMPATHY
EXCELLENCE

F
FORTITUDE
FRIENDLINESS
FORGIVENESS

G
GRACE
GRATITUDE
GENEROSITY

H
HONESTY
HUMANITY
HELPFULNESS

I
INTEGRITY
INITIATIVE
INTELLIGENT

J
JUSTICE
JINESHWAR
JOYFULNESS

K
KINDNESS
KEVAL GNANI
KASHAY CONQUEROR

L
LABDHI
LENIENCY
LOYALTY

M
MERCY
MODESTY
MINDFULNESS

N
NICE
NITYA
NOBILITY

O
OPTIMISM
OBEDIENCE
OMNISCIENT

P
PURITY
PATIENCE
PEACEFULNESS

Q
QUIET
QUEST
OMNISCIENT

R
RESPECT
REVERENCE
RESPONSIBLE

S
SINCERITY
SIMPLICITY
SELF ENLIGHTENED

T
TOLERANCE
THOUGHTFULNESS
TRUSTWORTHINESS

U
UNDERSTANDING
UCHCHA GOTRA
UPAYOGA

V
VITRAAG
VITALITY
VEER/ VIRYA

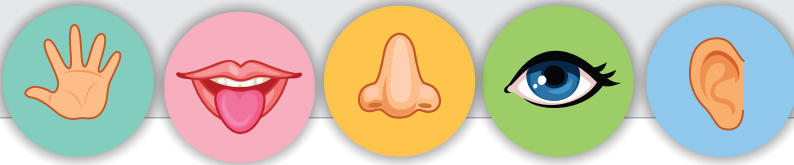
W
WISE
WISDOM
WORTHINESS

X
XENIAL
XENOPHILE

Y
YASHASVI
YASHODHAR

Z
ZEAL

- दीदी** : बच्चो आपके पास भी वह सारे गुण और संपूर्ण ज्ञान है जो भगवान के पास है... लेकिन क्या कोई आपको भगवान कहता है?
- रीया** : कृपया हमें समझाए... हम सबके बारे में अधिक जानना चाहते हैं और हम भी भगवान की तरह बनना चाहते हैं।
- दीदी** : अच्छा तो सुनो! परमात्मा महावीर की तरह हमारे पास भी सभी ५ इंद्रिय हैं लेकिन, परमात्माने कभी भी अपनी इंद्रियों का गलत उपयोग नहीं किया। कभी किसी को चोट पहुँचाने के लिए अपनी काया का उपयोग नहीं किया, कभी अपनी नेत्रों से टी.व्ही. या सिनेमा नहीं देखा। वह केवल अपनी भीतर की आवाज सुनते थे। वह हमेशा मौन रहते थे। अगर किसी ने उनसे पूछा, तुम कौन हो? उनका जवाब "अहम् भिक्खु... मैं एक संत हूँ।" वह कभी यह नहीं कहते थे कि "मैं एक राजकुमार हूँ।"
- रीया** : दीदी, अगर हम उनके जैसा व्यवहार करेंगे, तो क्या हम भी भगवान की तरह बनेंगे?
- दीदी** : हाँ, तो आप भी हमारे भगवान महावीर की तरह बन जायेंगे।



- Didi** : Children you also have all the virtues and knowledge as much as Bhagwan... But does anyone call you Bhagwan "?
- Riya** : Didi, please explain us... we want to know more about that and we also wish to be like Bhagwan.
- Didi** : Good, then listen...! We too have all 5 senses just like Parmatma Mahavir. But He never used his senses to hurt anyone or speak impolite language or see T.V and cinema or to gossip. Instead, on seeing someone's misery, His eyes were filled with tears of compassion. He heard only his inner voice. He always maintained silence. If anyone asked him, who he was, He would only say "Aham Bhikkhu", I am a saint. He would never say that "I am a prince".
- Riya** : Didi, If we behave like him, would we also become like Bhagwan?
- Didi** : Yes, Then you will also be like our Bhagwan Mahavir.



रीटा : दीदी हम हमारे गुणों का प्रागट्य कैसे कर सकते हैं?

दीदी : रीटा आप अपने दैनिक दिनचर्या की हर एक प्रवृत्ति को विनय और विवेक के साथ करके अपने गुणों का प्रागट्य कर सकते हैं। हमें भय, क्रोध, परिग्रह, लोभ, चोरी, चाडी, झूठ बोलना ऐसे अनेक अवगुणों पर विजय पानी होगी तभी हम वीर से महावीर का सफर तय कर पाएंगे।

रीटा : दीदी, लेकिन हमें कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है! हम कैसे विनय और विवेक के साथ कार्य करें?

दीदी : बच्चों मुझे आप आपकी हर मुश्किल बताओं, हम अवश्य ही उनका हल ढूँढ़ेंगे।

Rita : How do we develop our virtues?

Didi : Rita, your daily routine should be conducted with humbleness. We have to overcome our bad habits of fear, anger, possession, greed, stealing, gossip, ego, telling lies and more. Then only we can become like Parmatma Mahavir.

Rita : Didi, but we have to face so many difficulties. How can we perform our daily routine with humbleness?

Didi : Kids, tell me your problems. 'Every Problem has a Solution'



Vir to Mahavir



I am
FEARLESS



सोनल : जब घर में चुहाँ, झिन्गुर, छिपकसी देखती हूँ तब भयभीत होकर मैं चील्लाते लगती हूँ।

दीदी : जब वर्धमान ८ साल के थे तब वह मित्रों के साथ खेल रहे थे तभी एक देव वहा फुंकर मारते हुए भयंकर सर्प का रूप लेकर आया, उसे देखकर सभी बच्चों भाग गए किन्तु वर्धमान डरे नहीं और साहसपूर्वक उस सर्प को हाथ से पकड़कर दूर कर दिया।

Sonal : I shout loudly in fear when I see a mouse, insects or a lizard in my house.

Didi : One day, 8-year-old Vardhman was playing with his friends. Just then they saw a ferocious cobra slithering and hissing around the tree . Other boys trembled with fear and ran away, but Vardhman was fearless, he caught the snake in way it is not hurt and kept aside far from everyone.



बदला लेने के भावों पर विजय पाकर, मैत्री के भावों से हम भी
"वीर से महावीर" बन सकते हैं

By overcoming the feelings of revenge with
friendship, we can too become... from "Vir to Mahavir"

10th August 2021

06

LÔÔK N LEARN





I am
FEARLESS



रोहिणी : दीदी मुझे अंधेरे से बहुत डर लगता है।

दीदी : एक दिन जब वर्धमान अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे तब उनके खेल में शामिल होने एक देव बालक का स्वरूप धारण करके आया। खेल के नियमानुसार पराजित बालक विजेता बालक को अपने कंधे पर बिठाकर घुमाये। देव को वर्धमान की परिक्षा का अवसर मिल गया और जैसे ही वर्धमान उस देव के कंधे पर बैठे, देव ने एक विकराल राक्षस का रूप धारण किया। किंतु वर्धमान तनिक भी घबराये नहीं और वज्र जैसा कठिन घूँसा राक्षस के कंधे पर मारा! उसकी वेदना देव से सहन नहीं हुई और उन्होंने वर्धमान से क्षमा मांगी।

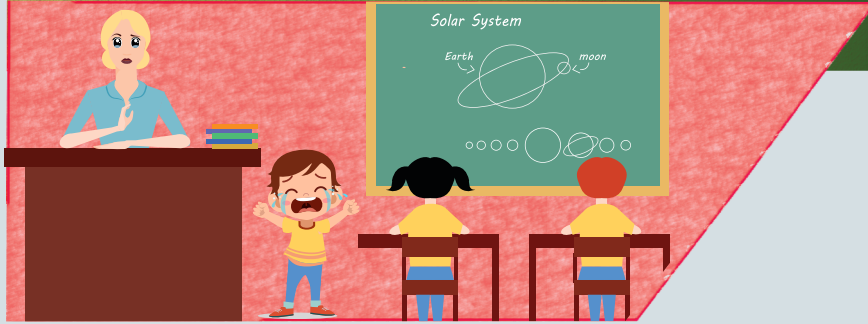
Rohini : Didi, I am very scared of darkness.

Didi : One day when Vardhman was playing with his friends, a deity in the form of a boy joined the group. The winner had to ride on the loser's shoulder. Vardhman was the winner and the deity was the loser of the game and so the deity got Vardhman on his back. As soon as Vardhman sat on diety's back , the diety started to grow himself into a huge giant and flew in the sky to scare everyone. Vardhman was undaunted. He controlled the giant with his fist. The deity cried in pain and transformed into his original form. He asked Vardhman for forgiveness.

भय पर विजय पाकर, निर्भय होकर हम भी
"वीर से महावीर" बन सकते हैं

By overcoming the feelings of fear with
bravery, we can too become... from "Vir to Mahavir"





I am
HUMBLE



ईशान : दीदी जब स्कूल में मुझे शिक्षक डाँटते हैं, मुझपर शिष्टता बतاتی हैं तब मुझे बहुत गुस्सा आता है और मैं मन ही मन शिक्षक को कोसता हूँ।

दीदी : तीर्थंकरों को माता के गर्भ से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञान होता है। एक दिन इन्द्र ब्राह्मण का रूप धारण कर ज्ञानशाला में आये हैं और वर्धमान को शास्त्र के अत्यंत कठिन प्रश्न पूछा। वर्धमान ने तत्काल ही उन प्रश्नों का योग्य प्रत्युत्तर विनय, विवेक, सरलता से और अहंकार रहित दिए। जब ३ ज्ञान के धारक वर्धमान अपनी बुद्धि का अहंकार नहीं करते, तब हम क्यों क्रोध, अहंकार और अविनय व्यक्त करें।

Ishan : I get very angry when my teachers scold me and impose discipline on me.

Didi : Tirthankars are blessed with Mati Gnan, Shrut Gnan and Avadhi Gnan since the time of conception. One day, a deity disguised as an old brahmin came to Vardhman's school. He asked extremely complex questions on grammar, which were answered correctly without hesitation by little Vardhman. If the master of 3 Gnans, Vardhman himself had no pride, no ego, no anger and no disrespect for others, then should we hold on to all of that?

अहंकार पर विनय पाकर, निरहंकारी बनकर हम भी
"वीर से महावीर" बन सकते हैं।

By overcoming ego with humbleness,
we can too become... from "Vir to Mahavir"





I am
MODEST



सोहम : दीदी जब मेरी अपने भाई-बहनों के साथ घर पर बहुत अनबन होती है, मुझे उनकी कोई भी बात मानने में बड़ी मुश्किल होती है।

दीदी : वर्धमान ने निश्चय किया था की वे कभी अपने माता-पिता को दुखी नहीं करेंगे। उनके माता-पिता के स्वर्गवास के बाद वे अपने बड़े भाई नंदीवर्धन के पास गये और अत्यंत विनयपूर्वक, हाथ जोड़कर दीक्षा लेने की अनुमति माँगी। किन्तु माता-पिता के वियोग का दुःख कम न होने के कारण नंदीवर्धन ने वर्धमान को दो वर्ष बाद दीक्षा लेने की विनंती की और परमात्मा ने उस विनंती का विनय और आदरपूर्वक स्वीकार किया।

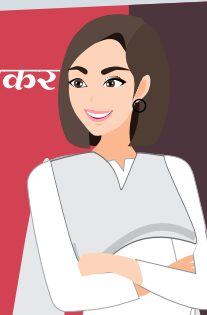
Soham : Didi, I have lots of clashes with my own brothers and sisters as I find it very difficult to follow their advice.

Didi : Vardhman had a resolution not to hurt his parents. After the death of his parents, He sought His brother's permission to allow him to follow his chosen path. King Nandivardhan, the elder brother of Vardhman was aghast as they had just lost their parents and he was not prepared for the loss of his younger brother who wanted to renunciate the world. Hence, he requested Vardhman to stay back for two more years. Vardhman accepted his brothers request without any argument.



अविनय पर विनय पाकर, विनय, नम्रता, के गुणों को अपनाकर
हम भी "वीर से महावीर" बन सकते हैं।

By overcoming impoliteness with modesty,
we can too become... from "Vir to Mahavir"



Vir to Mahavir



I am

PHILANTHROPIST



क्रिश् : जब हम बाहर जाते हैं तह जगह जगह पर जब जरूरीयात मंद कुछ ना कुछ पैसे, अन्न, कपडें वगैरे माँगने आते हैं तब बड़ी मुश्कील होती है।

दीदी : वर्धमान महावीर ने दीक्षा पूर्व एक वर्ष तक दिन-दुःखी आदि के उद्धार के लिए मुक्त हाथों से धन, सुवर्ण रत्न, वस्त्र, अलंकार इत्यादी जिसे जो चाहिए उसे वही देते हैं। भगवानने प्रतिदिन ३ घण्टे, एक करोड आठ लाख सुवर्ण मुद्राओं का दान दिया। दान मानव जाति के लिए सदैव आवश्यक है। बच्चों हमें भी प्रति दिन कम से कम एक रोटी, एक रुपये का दान देना चाहिए।

Krish : When we go out, it gets very annoying when needy people pester us and ask us to give them money, food or clothes.

Didi : One year prior to Diksha, every day for 3 hours, Vardhman Mahavir gave away gold coins, clothes, jewels etc. Everyone coming to him was given whatever he desired irrespective of whether he was rich or poor. In that time Bhagwan gave away 1 crore and 8 lakh gold coins everyday. Giving is one of the foremost duty of an human being. We too should try to give at least one chapati or one rupee daily to the needy.



लोभ वृत्ति पर विजय पाकर, परोपकार वृत्ति में स्थीर बनकर हम भी "वीर से महावीर" बन सकते हैं।

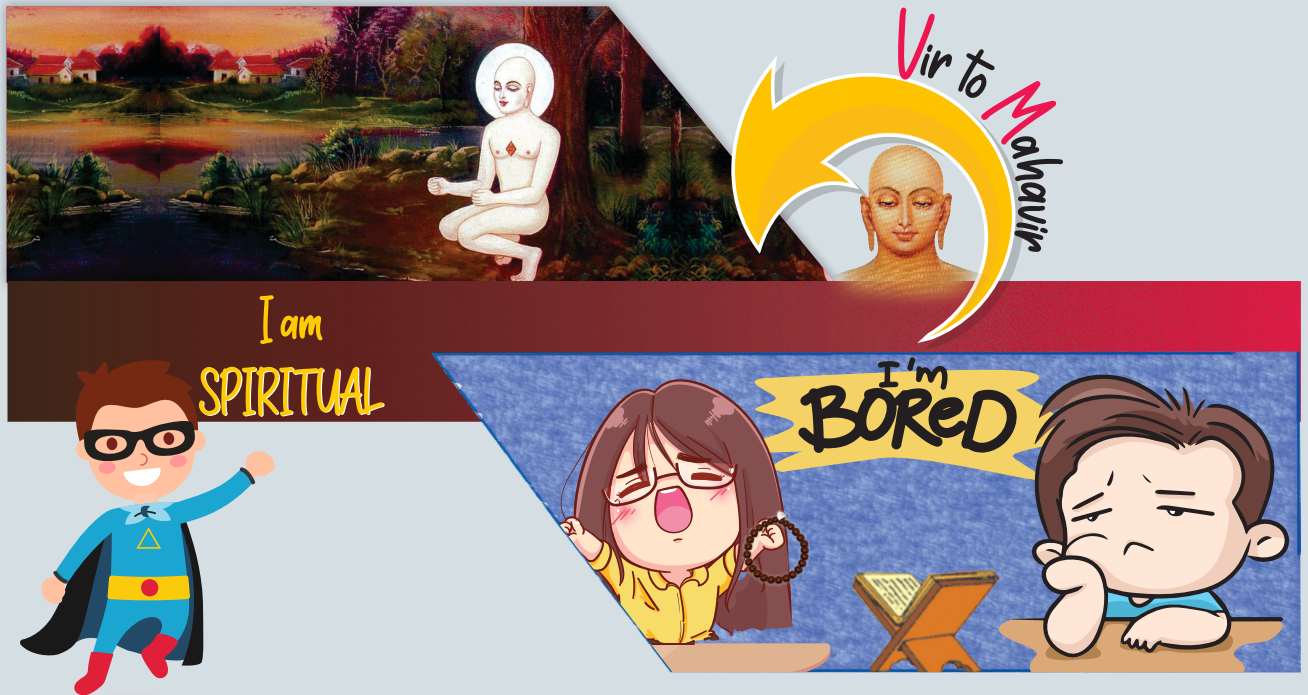
By overcoming greediness with Philanthropy, we can too become... from "Vir to Mahavir"

10th August 2021

10

LÔÔK N LEARN





प्रित : दीदी, में जब भी धर्म आराधना जैसे ध्यान, माला, कंठस्थ, प्रतिक्रमण इत्यादि करना शुरू करती हूँ तब मेरा मन विचलीत होता है और आराधना में मन एकाग्र नहीं रहता।

दीदी : प्रित, वर्धमान महावीर ने अपने सभी कर्मों को क्षय करने के लिए दीक्षा के बाद साधना शुरू कर दी। अकेले मौन, उपवासी यह हुई शरीर से साधना। मन से सभी जीवों के प्रति मैत्री, करुणा, दया भाव, खड़े खड़े ध्यान की आराधना की। आत्म की शुद्धि के लिए भगवान ने ऐसी कठिन साधना 12½ वर्ष तक की। हमें भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

Preet : Didi, my mind wanders off when I try to meditate or chant mantras, learn sutras or do Pratikraman. I simply cannot focus on them.

Didi : Preet, to eliminate his karmas, Vardhman Mahavir used to practice many spiritual rituals. He not only practised rituals like fasting or maun, but also sent peace vibrations to all living beings. He was compassionate and kind towards all living beings. He practiced many such rituals for 12½ years. We must not be lazy in performing our religious rituals.

प्रमाद पर विजय पाकर, धर्म आराधना में स्थीर बनकर हम भी "वीर से महावीर" बन सकते हैं।

By overcoming laziness and by meditating like Parmatma, we can too become... from "Vir to Mahavir"





I am

COMPASSIONATE

Mosquito Control



रीया : दीदी चींटी, मच्छर, मच्छर जैसे अन्य छोटे छोटे जीव हमें काटते हैं, तब बहुत दर्द होता है। मुझसे यह सहन नहीं होता और मैं तुरंत कीटनाशक का उपयोग करती हूँ।

दीदी : रीया क्या आप जानते हो कि जब परमात्मा महावीर एक बार जंगल से विहार कर रहे थे तब उनका सामना एक दृष्ट और विषैले सर्प से हुआ। परमात्मा को अपने सामने देखकर, सर्प ने अनेक बार विष पूर्ण जवालाएँ फेंकी और परमात्मा के पैर के अंगुठे में डंख मारा। लेकिन परमात्मा शांत रहे। उनके दिल में करुणा थी इसलिए सर्प को हिंसा से मुक्त कराने के लिए उन्होंने कहा... "बुज्झ बुज्झ चण्ड कौशिक" तभी सर्प को जाती स्मरण ज्ञान हुआ और वह अपना बाकी जीवन पश्चाताप से बीताने लगा। मृत्यु पाकर वह वैमानिक देव योनि में उत्पन्न हुआ।

Riya : Small insects and pests like ants, mosquitoes, flies are very irritating. They bite and hurt us. I immediately use pesticides on them.

Didi : Once Vardhman Mahavir was passing through a dense forest. A giant black serpent came out hissing fiercely. He stung Parmatma, however Mahavir stood unaffected. The snake then slithered towards Mahavir and pierced its poisonous fangs in Parmatma Mahavir's toe. He stood unmoved. His eyes reflected compassion for the snake. Parmatma said, "Bujh! Bujh! (Be calm) Chandkaushik". The serpent was tranquil on hearing these words. His past birth flashed through his mind. The serpent repented for his past sins and after death was reborn as a Vaimanik Dev.

क्रोध पर विजय पाकर, सहनशीलता, मैत्री और करुणा के भावों से हम भी "वीर से महावीर" बन सकते हैं

By overcoming Anger with peace and patience, we can too become... from "Vir to Mahavir"

10th August 2021

12

LÔÔK N LEARN





I am
FORGIVING



रीना : दीदी अगर मेरे किसी मित्र ने मुझे चोट या हानी पहुँचाने का प्रयत्न किया तो मैं तुरंत ही उसे सबक सिखाती हूँ।

दीदी : एक दिन भगवान महावीर छम्मणि गाँव के बाहर ध्यानस्थ थे तब एक ग्वाला वहाँ अपने बैलों को छोड़कर अपने काम से चला गया। कुछ समय बाद जब वह वापस लौटा तब बैलों को वहाँ न देखकर क्रोधित हो गया और उसने परमात्मा के दोनों कानों में कांस नामक लकड़ी के खिले पत्थर से ठोक दी! इस दारुण कष्ट में भी परमात्मा उनकी साधना में लीन रहे। वे जरा भी चलित नहीं हुए, न ही उन्होंने ग्वाले पर गुस्सा किया न द्वेष किया।

Rahul : Didi, if any friend of mine hits me or tries to harm me in any way, I take revenge.

Didi : One day Bhagwan Mahavir was meditating near a town. A cowherd happened to come there and left his oxen in Prabhu's asylum and went to the town to finish some work. When he returned back, his oxen were missing. He got extremely angry as he thought that Parmatma had hid his oxen and not returning back. He took sharp blade of grass and hammered it into Parmatma's ears. However, this excruciating pain did not distract Parmatma Mahavir's dhyana sadhana . He also forgave the cowherd.

बदले की भावना पर विजय पाकर, क्षमा और मैत्री के भावों से हम भी "वीर से महावीर" बन सकते हैं

By overcoming revenge with forgiveness,
we can too become... from "Vir to Mahavir"



Activity time:

PUNYA BANK

Save for the Future



INFORMATION CONTACTS MORE



जैसे धर्म आराधना करना हमारा कर्तव्य है, समभाव में रहना हमारा कर्तव्य है वैसे ही सदभावना करते रहना भी हमारा एक कर्तव्य है। दूसरों के चेहरों पर मुस्कान लाना यह भी वीर के वारसदारों का कर्तव्य है।

किसी को खुशी और आनंद देने से ज्यादा और कोई खुशी नहीं हो सकती। जितनी ज्यादा खुशी हम किसी को देते हैं उतनी ही खुशी का एहसास हमें होता है। खुद को खुशी प्राप्त होती है जब हम किसी को खुशी देते हैं।

परमात्मा कहते हैं की 'जिस चीज की चाह है बस वो देते रहो। यदि आप को खुशी की चाह है तो दूसरों में खुशी बाँटो'। दूसरों को खुशी देना यह इस दुनिया का सब से बड़ा सुख है।

आओ हम मिलकर एक महिना सभी को खुशी देने में बिताए। हर सप्ताह ५ लोगों को खुशी और हसी देकर नीचे दिए टेबल पर उसे अंकित करें।

Just like doing Dharma aaradhana is essential, being in equanimity is essential so is goodwill for others essential. It's our duty to bring a smile on everyone's face.

There is more happiness in giving than there is in receiving The more we make others happy the greater will be our own happiness and deeper our sense of having served humanity.

Parmatma says...'Make others happy and you will be happy by yourself'. Give what you want to receive. If you want happiness, make others happy you will be automatically happy. The greatest happiness in the world is to make others happy.

Let us celebrate this month as "Happiness month" and each week let us try to make 5 people happy. Also keep a record of your "Happiness donation" act in the table given on next page.

Family record table:

No.	Name of the person	Act of happiness	Special remarks
1			
2			
3			
4			
5			



Friends/neighbours record table:

No.	Name of the person	Act of happiness u did	Special remarks
1			
2			
3			
4			
5			



Our helpers record table:

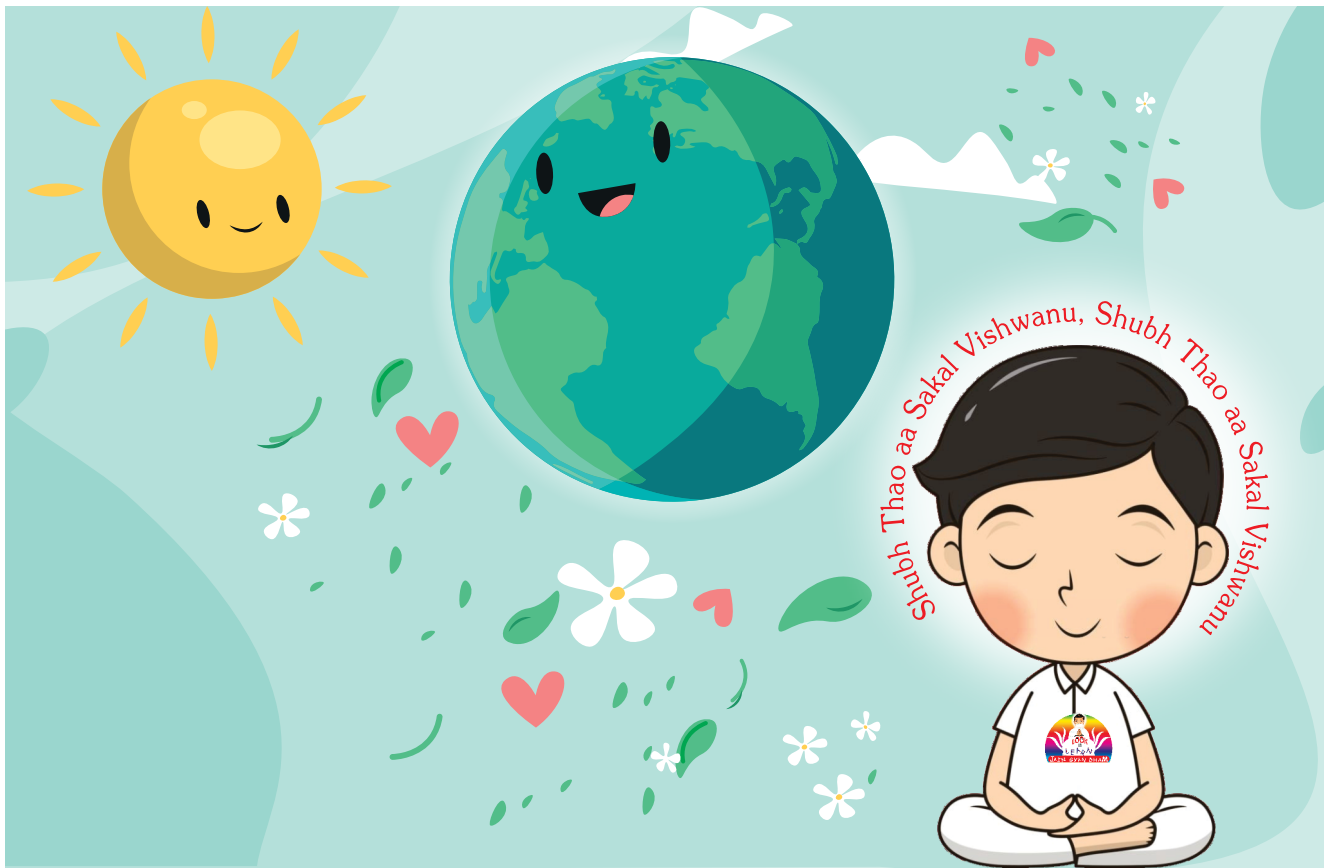
No.	Name of the person	Act of happiness u did	Special remarks
1			
2			
3			
4			
5			



Unknown peoples record table:

No.	Name of the person	Act of happiness u did	Special remarks
1			
2			
3			
4			
5			





Paropkar with Peace

Let's begin with a comfortable position.

You can lie down or sit comfortably.

Rest your hands on your lap.

Slow down... watch your breath closely.

Watch it **go IN**, watch it **come OUT**.

Watch your BREATH giving you all the ENERGY.

Inhale.... Exhale...

Close your eyes softly and gently.

Allow your MIND now to
spread happiness all around you.

Shubh Thao Aa Sakal Vishwanu



You start sending friendly wishes to all who are HURT. Be it small bird or small child. See yourself helping the needy. To some you are giving food, and for some you quench their thirst. You bring a smile on everyone's face. You wish wellness and happiness and peace for all.

May we all be SAFE & WELL. Your kind wishes will make this world a better place, where we share & care. PAROPKAAR - helping someone in need makes me fearless, strong & kind.

Let there be a smile on your face & open your eyes. Slowly stretch your hands, fingers and legs. Take a moment to feel GOOD about yourself as you have in your thoughts helped someone. Your friendly wishes will go far & reach out to every heart.

Let us be in PEACE with PAROPKAAR.



Scan to watch on



10th August 2021



LÔÖK N LEARN





If you are the one who nurtures, takes care,
adds values and is always helpful to all living beings...

You are Mahavir!

If you feel the pain that others go through...

You are Mahavir!

If you cooperate with all and lend a helping hand to all...

You are Mahavir!

If instead of boosting ego, you understand the flaws of others,
if they out perform you, you celebrate and don't mind...

You are Mahavir!

If you accept others the way they are, without complaining...

You are Mahavir!

If you radiate love, to every living being, not just to a few,

You are Mahavir!

If you can heal a dispirited, sad, aching heart,

You are Mahavir!

If you can just let go - forgive and forget easily,

You are Mahavir!

If you can accept others even when they aren't right,
when all others reject them, you stand by them...

You are Mahavir!

If you care for someone as if they belong to you,
If Compassion is a divine lens, you see the world through...

You are Mahavir!



Bhakti song



હે જીવ જરા સાંભળ...

હે જીવ જરા સાંભળ, તુ શું કરી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !
ઉત્તમ તને જે મળ્યો, ભવ સાધના જ કરવા,
એને ગુમાવે તૂ, સાધનો ને મેળવ્યા...
રત્નોં ને ફેકી ને તૂ, પથર વિળી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !
જેને તૂ માને તારો, આ ભવનો છે આ સાથી,
શાને કરે છે તૂ રાગ, શાને કરે છે મૈત્રી...
આત્મા ને ભૂલી ને તૂ, કાયા ચુકી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !

શૈશમ વિતી ગયો છે, યૌવન રહ્યો છે વિતી,
આવી રહ્યો છે ઘડપલ્લ, મૃત્યુ રહ્યો છે તાકી...
સમય ને તૂ ગુમાવી, ધન ને લૂટી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે...
સ્વજન સગા ને મિત્રો, સહુ એ તને છે વ્હાલા,
સ્વાર્થ પુરો જ થાતા, થઈ જાએ છે પરાયા...
પર ને પોતાના કરવા, શાને મથી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !
દર્શન તારો નથી શુદ્ધ, ને જ્ઞાન પળ છે કાચુ,
વ્રત મા ઘડા છે ચિત્રો, તપના કરે તો જાજૂ...
પાયા વિના તૂ શાને, મહલ ચઢી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !
જિનરાજ તુજને મળ્યા, સદગુરુને તૂ પામ્યો,
જિન વચનો પર સાચુ, વિશ્વાસ તે છે કર્યુ...
આટલુ મળ્યા પછી તૂ, હવે શું શોધી રહ્યો છે ?
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !
હે જીવ જરા સાંભળ, તુ શું કરી રહ્યો છે,
છે ક્યા જવાનુ તારે, ને ક્યા જઈ રહ્યો છે !

- Gurubhakt
Mehta Parivaar





जब अन्य को दुःख का कारण मानते हैं, तब दुःख बढ़ जाता है...
जब स्वयं को दुःख का कारण मानते हैं, तब दुःख सहन हो जाता है।

When we believe that others are the cause of our grief,
then the affliction increases &
when we consider ourselves to be the cause of grief,
then grief is tolerated easily!

दुःख में प्रसन्नता का सूत्रः

"तु ही तेरा कर्ता,
तु ही तेरा भोगता है"



Accept



Refuse

The secret of happiness in sorrow...

"Only you are the doer
and you pay for yourself"

